International Journal of Enhanced Research in Educational Development, IJERED,
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 2, Mar.-Apr, 2025

हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं में दलित पत्र - पत्रिकाओं का स्थान

तुषार माहन[1],अजय[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विशविद्यालय
[2]शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विशविद्यालय

दलित पत्रकारिता का उदभव और विकास

वास्तव में दलित पत्रकारिता का एक लंबा इतिहास रहा है ज्योतिबा फुले ने 1 जनवरी 1877 से 'दीनबंधु' साप्ताहिक का प्रकाशन कर दलित पत्रकारिता की शुरुआत की। इस विषय में डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन ने लिखा है कि ' इसके माध्यम से फुले दंपत्ति ने इच्छा व कार्य शक्ति से समाज सुधार के बुनियादी कार्य को पत्रकारिता में प्रतिबिंबित किया तथा उसकी योगदान की रचनात्मक छाप डॉ आंबेडकर सहित अनेक दलित पत्रकारों पर पड़ी'।

हिंदी पट्टी में जिन दलित साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी दलित साहित्य को प्रमुखता दिलाई उनमें प्रमुख है 'बुहरि नहिं आवना' ',हिमायती', 'स्मारिका', 'अछूत', 'आदि हिंदू', 'अश्वघोष बयान', 'अभी मूकनायक', 'दलित वार्षिकी', 'अपेक्षा', 'तीसरा पक्ष', 'भीम प्रज्ञा', 'अंबेडकर इन इंडिया', 'बहुजन युग', 'दलित दस्तक', आदि। दलित साहित्य पत्रिका ने दलित समाज के साहित्य, इतिहास, दलित आंदोलन, पीड़ा, यातना, और संघर्ष को मुख्यधारा में लाने में विशेष भूमिका निभाई है। दलित पत्रकारिता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि स्वामी अछूतानंद और डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन इसमें दो राय नहीं है कि बाबा साहेब डॉ अंबेडकर और स्वामी अछूतानंद ने बीसवीं सदी के दूसरे दशक में दलित पत्रकारिता की नींव रखी थी उत्तर भारत में स्वामी अछूतानंद और महाराष्ट्र में अंबेडकर ने अपने संपादन में पत्र निकालकर दलित पत्रिकाओं का आरंभ किया, देखा जाए तो विकास यात्रा ने अपने 100 साल पूरे कर लिए हैं स्वामी अछूतानंद हिंदी भाषा में 'पत्रिका' डॉ. अंबेडकर ने 31 जनवरी 1920 मराठी भाषा में 'मूकनायक' पाक्षिक पत्र निकाला था, डॉ. अंबेडकर ने अपने जीवन काल में मूकनायक के अलावा 'समता', 'बहिष्कृत', 'जनता' और 'प्रबुद्ध भारत' नामक महत्वपूर्ण पत्र निकाले थे।

आज से 100 साल पहले डॉ. अंबेडकर इस बात को समझ चुके थे की मुख्यधारा की पत्रकारिता वर्ण और जाति के शिकंजे से जकड़ी हुई है जिसके चलते हिंदुओं के पत्र पत्रिकाएं दलित समस्याओं को उठाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाएंगे डॉ. अंबेडकर यह समझ चुके थे कि समाज के समस्या को उठाने के लिए पत्र-पत्रिकाओं से कोई सशक्त माध्यम नहीं हो सकता इसलिए उन्होंने दलित समस्या को उठाने के लिए अखबार निकालने का निश्चय किया। डॉ. अंबेडकर यह भी देख रहे थे कि दलितों के साथ जो जुल्म और अन्याय किया जा रहा है उसको तत्कालीन संपादक बताते कम छुपाते ज्यादा है डॉ. अंबेडकर ने जब 'मूकनायक' निकाला तो उसके प्रवेशांक में एक बड़े ही मारके की बात लिखी थी 'कि दलितों पर जो अत्याचार और अन्याय हो रहा है उस अन्याय का प्रतिरोध और प्रतिकार करने के लिए पत्र ही एक साधन है'-। यह बिल्कुल सही बात है कि दलित पत्रकारिता का सफर आसान नहीं रहा डॉ आंबेडकर ने मराठी भाषा में मूकनायक निकालकर दलितों के जीवन को एक आधार प्रदान किया उन्होंने इसके प्रचार के लिए तत्कालीन केसरी पत्र में एक विज्ञापन दिया था, दलित पत्रकारिता के जानकार विद्वान डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपने पड़ताल में बताया है कि 'तत्कालीन केसरी पत्र के संपादक ने पैसे लेकर भी मूकनायक का विज्ञापन छापने से इंकार कर दिया था' इससे यह अंदाजा होता है कि दलित पत्रकारिता के क्षेत्र में स्थान इतना नहीं था जितना अन्य पत्रिकाओं का। डॉ आंबेडकर चाहते थे कि ऐसी पत्रिकाओं का विकास होना चाहिए जिसमें दलितों की आवाज

को उठाया जा सके। बीसवीं शताब्दी में 3 बड़े नायक महात्मा गांधी, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर, और राम मनोहर लोहिया जाति प्रथा से टकराते हैं जाति प्रथा को लेकर गांधी और अंबेडकर आपस में टकराते हैं। अंग्रेज सरकार ने अंबेडकर से सहमति जताते हुए जब यह घोषणा की कि आरक्षित स्थानों पर केवल दलित ही अपनी पसंद के व्यक्ति को वोट देकर चुन सकेंगे तथा सामान्य सीटों पर भी अन्य जातियों के प्रत्याशी को वोट दे सकते हैं तो गांधीजी ने उसका यह कहकर विरोध किया कि इससे हरिजन हिंदुओं से अलग हो जाएंगे उन्होंने यरवदा जेल में 30 दिनों तक अनशन किया गांधीजी के लिए डॉ. अंबेडकर को और दलित अधिकार से वंचित का महत्व है कि जो समझौता हुआ वही आरक्षण व अन्य सुविधाओं के रूप में हुआ। गांधीजी हरिजनों का उद्धार चाहते थे इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता । उन्होंने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की और उस के बैनर तले सेवा कार्यों से लेकर हरिजन का प्रकाशन इसका प्रमाण है। ऐतिहासिक तथ्य है की 4 फरवरी 1932 को 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के बंद होने के उपरांत गांधीजी ने हरिजनों के उद्धार के लिए 'हरिजन' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र निकाला देशभर में उन्होंने हरिजन सेवक संघ की शाखा बनाई। संघ के उद्धार के लिए स्थायी गतिविधियों की जानकारी 'हरिजन' के प्रत्येक अंत में देखी जा सकती है, 11 फरवरी 1933 को निकले हरिजन के प्रवेशांक की संपादकीय में ही गांधीजी ने अस्पृश्यता शीर्षक संपादकीय लिखी और उसमें साफ साफ कहा कि 'जातीय छुआछूत शास्त्रों के खिलाफ है'। गांधी से अलग दृष्टिकोण अपनाते हुए अंबेडकर ने जातिभेद को खत्म करने के लिए बहुत प्रयास किया सामाजिक अन्याय के हर कार्य के खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया अपने संघर्ष को बल पहुंचाने के लिए उन्होंने पत्रकारिता को भी अपनाया।

आज़ादी मिलने के बाद दलित की सामाजिक आर्थिक स्थिति को देखते हुए डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर जी ने 'हिमायती' समाचार पत्र का प्रकाशन वर्ष 1962 में किया। पिछले 60 वर्षों से इस पत्र का प्रकाशन होता आ रहा है इस समाचार पत्र का प्रचार प्रसार दिल्ली एवं भारत के अन्य राज्यों में भी होता आ रहा है।

तत्काल में हाल ही में आजादी मिलने के पश्चात भारत की दशा व दिशा में सुधार नहीं था .स्थितियां पहले से अच्छी ना होने के कारण दलितों को दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ रहा था। समाज का पिछड़ा वर्ग जिसकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी साथ ही साथ उसे छुआछूत जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा था डॉ. सोहनपाल जी ने दलितों के जीवन को हिमायती के माध्यम से समाज और जनता के सामने रखा। 'हिमायती' को निकलते हुए लगभग 60 वर्ष हो चुके हैं इस समाचार पत्र में दलितों के इतिहास को सामने रखा गया है कि किस प्रकार से भारतीय धार्मिक ग्रंथों में दलितों को शोषण का शिकार होना पड़ा था सिर्फ कुछ संस्कृत श्लोक को सुनने मात्र से अछूतों के कानों में शीशा पिघलाकर डालना एवं एकलव्य की प्रतिभा को देखते हुए उसके दाएं हाथ का अंगूठा ही मांग लेना जिससे कि वह कभी धनुष का इस्तेमाल ना कर सके इस प्रकार दमनकारी व चालाकी से इतिहास के ब्राह्मणवादी विचाधारा ने शूद्रों का का शोषण किया।

समय बीतने के साथ-साथ यह भी देखा गया कि कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था को जाति आधारित वर्ण व्यवस्था में बदलकर शुद्रो के शोषण में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। इसलिए 'हिमायती' पत्रिका को पढ़ते हुए यह देखा जा सकता है कि इस समाचार पत्र ने दलितों के उत्थान, कल्याण और विकास की बात की है डॉ. सोनपाल जी ने अपने समाचार पत्र 'हिमायती' में दलित महापुरुषों को विशेष रूप से स्थान दिया है डॉ. अंबेडकर, सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले, घासीराम, रविदास आदि इन महापुरुषों के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि जिस तरह से उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष किया एवं सामाजिक समस्याओं का सामना करते हुए भी अपने जीवन को दूसरों के लिए प्रेरणादायक बनाया डॉ आंबेडकर जिन्होंने अपने बचपन से ही शोषण का शिकार होते हुए खुद को देखा और शिक्षा के लिए स्कूल कॉलेजों से नकारे जाने के बाद भी खुद को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ले जाना यह इस बात की ओर संकेत करता है कि अन्य अछूतों को भी अपने जीवन में संघर्ष का मार्ग अपनाते हुए शिक्षा के उच्च शिखर पर पहुंचना चाहिए लोगों में समतावादी भाव पैदा करने में हिमायती काफी सफल हुआ।

इसके साथ-साथ ज्योतिबा फुले, और सावित्रीबाई फूले जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में काम किया स्त्री एवं अन्य विभिन्न जातियों के लोगों को शिक्षा देने के लिए स्कूलों की स्थापना की साथ ही हम देखते हैं कि पेरियार जो स्वतंत्रता संघर्ष के समय एक महान सामाजिक क्रांति लाने वाले व्यक्ति हैं रविदास, कबीर दास ने अपने उपदेशों के माध्यम से समाज को एकजुट एवं भेदभाव को खत्म करने का प्रयास किया है।

इन सभी महापुरुषों के विचारों को अपनाते हुए हिमायती ने महात्मा मानवतावादी संतो के विचारों का प्रचार-प्रसार किया समाज में व्याप्त जाति भेदभाव छुआछूत असमानता उच्च नीच का विरोध एवं निषेध किया साथ ही लोगों में मानवतावादी, क्षमतावादी विचारों का प्रचार करना एवं व्यवहार रूप में लाना ही 'हिमायती' का उद्देश्य रहा है इस समाचार पत्र को निकलते हुए लगभग 60 वर्ष हो चुके हैं इसके द्वारा देश में मनुस्मृति पर आधारित वर्ण व्यवस्था ऊंच-नीच भेदभाव एवं समाज में व्याप्त जाति भेदभाव को समाप्त करना है।

विगत 20 वर्षों में 'हिमायती' भारतीय दलित साहित्य अकादमी के समाचार पत्र के रूप में कार्यरत है शिक्षण संस्था एवं साहित्यिक संस्थाओं में सफल रहा है। दलित समाचार पत्र कैसे हो और उसे किस प्रकार से समाज में स्थापित किया जाए या संचालित किया जाए हिमायती ने उसके लिए भी मार्गदर्शन का काम किया है हमें दलित शोषितो के उत्थान के लिए कैसे लिखना चाहिए इसके लिए 'हिमायती' ने अनेक पत्रकारों का मार्गदर्शन किया है 'हिमायती' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कोविड-19 महामारी के दौरान में अधिकांश दलित पत्र पत्रिकाएं लगभग बंद हो चुके थे या अपने अनियमित रूप से निकलते थे ऐसे कठिन समय में भी हिमायती निरंतर निकलते हुए दलितों में वैचारिक क्रांति फुकने में आज भी अग्रसर है अब जबकि समाचार पत्र निकालना आर्थिक रूप से काफी कठिन हो जाता है ऐसी स्थिति में भी 'हिमायती' अपनी उपस्थिति बनाए हुए। इस प्रकार से हिंदी की अनेक दलित पत्रिकाओं ने वंचित वर्ग के उथ्थान में अपनी भूमिका निभाई है।

इससे आने वाले समय में दलित पत्रिकाओं का समाज में अनेक प्रकार से योगदान रहेगा -दलित पत्रिकाओं को पढ़ने के प्रति रुझान बढ़ेगा,दलित पत्रिकाओं के व्यापक स्वरूप की जानकारी प्राप्त होगी,लोगों में दलित पत्रिकाओं को पढ़ने व समझने में एक समझ का विकास हो सकेगा,संकीर्ण विचारधारा के बजाय व्यापक विचारधारा का विकास होगा,हास्य पर खड़े लोगों को मुख्यधारा में लाने में सफलता मिलेगी।,राजनैतिक लेखों के माध्यम से सरकारी नीतियो की आलोचनात्मक विचारधारा संभव होगी,नवीन उभरते दलित लेखकों एवं उनके रचनाओं की जानकारी मिलेगी,दलित लेखों के माध्यम से तात्कालिक परिवेश को समझना आसान होगा,विभिन्न प्रकार के विचारों से अवगत होने का मौका मिलेगा,दलित पत्रपत्रिकाओं के विषय में शोध की -संभावना अधिक विकसित होगी।

दलित पत्रिकाओं को पढ़ने का उद्देश्य

- दलित पत्रिकाओं के माध्यम से जनवादी विचारधारा को जानना।
- दलित पत्र-पत्रिकाओं में निहित स्त्री विमर्श व दलित विमर्श पर वैचारिक प्रभाव।
- प्रमुख पत्रिकाओं में निहित सांप्रदायिक प्रभावों को जानना।
- कहानी व लेख आदि माध्यमों से व्यक्ति का अस्तित्व व नैतिकता के व्यापक
- प्रभाव को देखना।
- मानव संबंध व संवेदना को दलित पत्रिकाओं के माध्यम से जानना।
- गैर दलित पत्रिकाओं में दलित लेखो को जानना दलित जीवनी के माध्यम से दलितों के जीवन संघर्ष को समझना।
- राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक मामलों में समाज में व्याप्त विचारों को देखना।
- राजनेताओं द्वारा हिंसा व नफरत के प्रभावी भाषणों से परिचित होना।
- दलितों के साथ होने वाले सामाजिक, आर्थिक, व राजनीतिक भेदभाव को रेखांकित करना।
- दलित पत्रिकाओं में दलित रचनाकारों की जीवनी व रचना परंपरा को आगे बढ़ाना।
- दलित पत्रिकाओं के माध्यम से महापुरुषों के जीवन संघर्ष को समझना।

- धार्मिक ग्रंथों में व्याप्त भेदभाव को जानना।
- दलित महापुरुषों के साथ हुए भेदभाव को समझने का प्रयास।
- दलित महापुरुषों के संघर्ष से अपने जीवन में प्रेरणा लाना।